ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम ***विषय- हिन्दी***

दिनांक-06-01-2021 ***खतरे की घंटी***

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

खतरे की घंटी

इसके बाद की कहानी यूरोपीय देशों द्वारा अफ्रीका, एशिया, अमरीका और ऑस्ट्रेलिया में छल-बल से अपने उपनिवेश स्थापित करने की कहानी है। इनमें अमरीका तो अँगरेज़ों के चंगुल से शीघ्र आज़ाद हो गया। शेष उपनिवेश भारत के स्वतंत्र होने के बाद आज़ाद हुए। चार-साढ़े चार सौ वर्षों तक यूरोपीय देशों ने अपने अधिकृत उपनिवेशों को जी भरकर लूटखसोटा । उनके खेतों से जंगलों से और उनकी खानों से प्राप्त कच्चा माल सस्ते-से-सस्ते भावों में खरीदा। फिर उससे अपने कारखानों का पेट भरा और उनसे जो माल तैयार हुआ, उसे महँगे-से-महँगे दामों में उन्हीं उपनिवेशों के बाजारों में बेचा। आज आजाद होने के बद भी लिया और अफ्रीका के अधिकांश देश पुनः उसी कुचक्र का शिकार हो रहे हैं। उनके बाज़ार

पर औद्योगिक और यांत्रिक कुशलता की दृष्टि से उन्नत संपन्न देशों का अधिकार है जिससे निकट भविष्य में मुक्ति मिलने की कोई संभावना नहीं दिखाई देती।

सच तो यह है कि औद्योगिक उन्नति की संपन्नता से यूरोप और अमरीका में एक विशेष प्रकार की संस्कृति पनपी है, जिसे सुविधा के लिए हम पश्चिमी संस्कृति कह सकते हैं। यह संस्कृति शोषण और दोहन की संस्कृति है। यह संस्कृति इतनी खाऊ है कि पृथ्वी पर विद्यमान सारे जीव और उस पर उगने वाली वनस्पति, उसके गर्भ में विद्यमान सारा खनिज, समुद्र के सारे जीव-जंतु और आकाश के सारे पक्षी खाकर भी उसकी भूख मिट नहीं पा रही है। यही नहीं, उसके पसार हुए पैरो के लिए पृथ्वी की विशाल शम्मा भी छोटी पड़ गयी है और अब इस संस्कृति में पला-बढ़ा मानव अन्य बसने योग्य ग्रहों की खोज में लगा हुआ है।

हम यूरोप और अमेरिका की बात छोड़ दें और देश की बात करें तो हम आज इसी भोग-संस्कृति के व्यामोह में फँस गये हैं।हमने अपने प्यारे देश का वनस्पति वैभव उजाड़ दिया है। हरे-भरे पहाड़ नंगे कर दिये हैं वन उजड़ गये तो उनमें विचरने वाले -परी भी धीरे-धीरे समाप्त हो रहे हैं कई दुर्लभ प्रजातियाँ तो बिलकुल समाप्त हो गयी हैं वन-क्षेत्र निरंतर घटते जा रहे हैं इससे वर्षा कम हो गयी है, होती भी है तो मेढ़क नहीं टर्राते लोग चीनी डिशेज़ के स्वाद में मेढ़कों को खा गये। वैज्ञानिक परीक्षणों के नाम पर साँपों , मेढ़कों, तितलियों, बंदरों और खरगोश, चूहों को मौत का परवाना थमा दिया गया है। इधर वन-क्षेत्र कम होने से में भी कमी आ गयी है तो उधर पहाड़ों पर पेड़ों की अंधाधुंध कटाई से पहाड़ खिसकने लगे हैं वन रेगिस्तान के फैलाव को भी रोकते थे। अब रेगिस्तान सुरसा की भांति मुँह फैलाए धरती की हरियाली को लीलते हुए बढ़े आ रहे हैं सादा जीवन और उच्च विचार के भाव अब थोथे भाषणों या पत्र-पत्रिकाओं के लेखक तथा पाठ्य-पुस्तकों के पाठों तब सीमित रह गये हैं व्यवहार तथा के आचरण से न सादे

जीवन का संबंध रहा है, न उच्च विचारों का, फलस्वरूप लोगों की भोगवृत्ति बढ़ गयी है। लिप्सा बढ़ गयी है। उनको थोड़े से संतोष नहीं हो रहा है। वे आज ही सब कुछ पा लेना चाहते हैं। धरती को यूरिया की खाद खिला-खिलाकर उससे फसलों-पर-फ़सलें लेकर,उसे वन्ध्या बना दिया है। अगली पीढ़ी जाए जहन्नुम में,इसकी उन्हें चिंता नहीं।उन्हें तो अपने भोगों की चिन्ता है।

क्रमशः

धन्यवाद ।

कुमारी पिंकी 'कुसुम'